प्रताड़ना, अत्याचार और क्रूरता का शिकार बलूचिस्तानी शहीद की आवाज

मुझे जंग-ए-आज़ादी का मजा मालूम है
बलूचों पर जुल्म की इन्तहां मालूम है
मुझे पाकिस्तान में जिंदगी भर रहने की दुआ ना दो
मुझे पाकिस्तान में सात साल रहने की सजा मालूम है।

– हबीब जालिब
बलूचिस्तानी कवि और क्रान्तिकारी

बलूचिस्तान का सच

भारत नीति प्रतिष्ठान
India Policy Foundation

संपादक

प्रो. गीता भट्ट

मानद फेलो, भा.नी.प्र. और एसोसिएट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय

geets71@hotmail.com

संपादन सहयोग

विनय जोशी

मानवाधिकार कार्यकर्त्ता एवं स्तंभकार

murdikar@gmail.com

प्रेरणा कुमारी

अधिवक्ता, उच्चतम न्यायालय

डॉ. अनिल कुमार

दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुवादक

राजेश्वर कुमार

शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय

अनुवाद सहयोग

सुमित कुमार, प्रवीण, शशिभूषण

© भारत नीति प्रतिष्ठान

प्रकाशक: भारत नीति प्रतिष्ठान

पता: डी-51, प्रथम तल, हौजखास, नई दिल्ली-110016

दूरभाष: 011-26524018, फैक्स: 011-46089365

ई-मेल: indiapolicy@gmail.com

वेबसाइट: www.indiapolicyfoundation.org

संस्करण: प्रथम (सितम्बर 2016)

ISBN: 978-93-84835-11-8

Design & Typeset: SBM Digitech

Email: manoj.sbmdigitech@gmail.com

मूल्य: ₹60/-

प्रस्तावना

'आतंक' बलूचिस्तान राष्ट्र के उदय को नहीं रोक सकता है।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लालकिले की प्राचीर से स्वतंत्रता दिवस पर बलूचिस्तान में मानवाधिकार के उल्लंघन का मुद्दा प्रखरता से उठाया है। इससे बलूचिस्तान के स्वतंत्रता सेनानियों में ऊर्जा का संचार हुआ है। उन्हें इस बात की संतुष्टि हुई है कि भारत उनकी आजादी के संघर्ष में उनके पीछे खड़ा है। पाकिस्तान के अधिनायकवादी शासन-व्यवस्था ने बलूचिस्तान पर जबरन कब्जा जमा रखा है। सही मायने में बलूचिस्तान पाकिस्तान के आंतरिक उपनिवेशवाद का शिकार है। संघर्षरत राष्ट्रीयता का समर्थन, नस्लवाद और रंगभेद नीति का विरोध; भारत की राजनीतिक-सामाजिक दर्शन का अभिन्न अंग रहा है। इसका एक उदाहरण हमारे सामने है जब भारत स्वयं परतंत्र था तब भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1927 में एक प्रतिनिधिमंडल अंतर्राष्ट्रीय रंगभेद विरोधी सम्मेलन में भाग लेने के लिए ब्रुसेल्स भेजा था। इसप्रकार भारत बलूचिस्तान के आजादी का एक स्वाभाविक सहयोगी है।

1947 से पहले बलूचिस्तान एक सम्प्रभु राष्ट्र था, जिसकी अपनी संसद थी; वे अपने आप को भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति एवं बौद्धिक विरासत से भी जोड़कर देखते रहे हैं। उनकी संस्कृति, परम्परा, दर्शन, साहित्य और वैश्विक-दृष्टि पाकिस्तान से मेल नहीं खाती है। पाकिस्तान, बलूचिस्तान का शोषण कर रहा है। पाकिस्तान का 43 प्रतिशत हिस्सा बलूचिस्तान का है, जहां पर्याप्त मात्रा में प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम, स्वर्ण, ताम्बा, जस्ता आदि खनिज उपलब्ध है। उदाहरण के लिए कुल प्राकृतिक गैस का 68 प्रतिशत बलूचिस्तान में पाया जाता है। परन्तु, एक दूसरा सच भी है कि बलूचिस्तान के अधिकांश घरों में बिजली नहीं है और अंधेरा छाया हुआ है।

एक ओर जहां बलूचिस्तानियों के साथ भेदभाव किया जा रहा है, उन्हें वंचित किया जा रहा है। वहीं दूसरी ओर पाकिस्तानी शासक एवं वहां की सेना, बलूचिस्तानियों के ऊपर सभी प्रकार के जुर्म करती आ रही है। बलोच नागरिकों की हत्या, बलात्कार एवं उनका अपहरण आम बात है। यद्यपि भारत ने पहले भी बलूचिस्तान के समर्थन में अपनी आवाज उठाई है, परन्तु प्रखर रूप में नहीं थी। इसलिए 2016 का वर्ष बलूचिस्तान की स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में मील का पत्थर साबित हो रहा है। यही कारण है कि जब भारत और भारत के नागरिकों ने आंतरिक उपनिवेशीकरण के खिलाफ बलूचिस्तानियों के संघर्ष को अपना नैतिक समर्थन दिया है।

जो बात सर्वाधिक कष्टदायक है वह यह है कि अपने आप को मानवाधिकार का ठेकेदार कहने वाले संगठन एमनेस्टी इंटरनेशनल को बलूचिस्तान में हत्या, लूट, बलात्कार और राज्य की शक्ति का नंगा नाच दिखाई नहीं पड़ा। पश्चिम के देश खासकर संयुक्त राज्य अमेरिका भी इस दोषारोपण से मुक्त नहीं हो सकता है। चूंकि, पाकिस्तान अमेरिका के एक एजेंट राष्ट्र के रूप में काम करता रहा है। इसलिए अमेरिका ने भी इस मुद्दे पर अपने आंख और कान बंद कर लिए थे। चीन द्वारा पाक के इस अलोकतांत्रिक व्यवहार का साथ देना अस्वाभाविक इसलिए नहीं है कि उसने स्वयं तिब्बत में इसी कृत्य को अंजाम दे रखा है। जिस प्रकार तिब्बत में वहां के स्थानीय लोगों की संस्कृति को मिटाकर, चीनी साम्राज्य को चीन निष्कंटक बना देना चाहता है, वही काम पाक बलूचिस्तान में कर रहा है।

भारत के बलूचिस्तान के पक्ष में समर्थन ने इस महाद्वीप में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का तो संकेत दिया ही है, साथ ही इसने उनलोगों को भी बेनकाब करने का काम किया है जो मानवाधिकार के नाम पर दोहरा मापदंड अपनाते रहे हैं। विश्व के लोगों को बलूचिस्तान की आजादी के लिए संगठित होना चाहिए और यह आशा करना चाहिए कि एक नए राष्ट्र का उदय शीघ्र ही यथार्थ रूप में हमारे समक्ष होगा। इस पुस्तिका में बलूचिस्तान की सच्चाई वहां के संघर्ष और पाकिस्तानियों के जुर्म को उजागर किया जा रहा है।

— प्रो. राकेश सिन्हा

बलूचिस्तान-एक गम्भीर मुद्दा

बलूचिस्तान का आतंरिक उपनिवेशीकरण

बलूचिस्तान का आंतरिक उपनिवेशीकरण स्वयं मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा एक सुनियोजित षड्यंत्र था। 1947 में बलूचिस्तान की आजादी को स्वीकार करते हुए भी पाकिस्तान ने साल भर के अंदर ही 1948 में यहां के समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों जैसे पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, ताम्बा और कीमती पत्थरों आदि के लोभ में आकर जबरन इसे अपने में मिला लिया।

बलूचिस्तान के पास तकरीबन एक ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की कीमत का प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध है जिसका लगातार पाकिस्तान अंधाधुंध दोहन कर रहा है जबकि स्थानीय बलूच नागरिकों को आधारभूत संरचनाओं और अन्य सुविधाओं से वंचित रखते हुए उन्हें दयनीय स्थिति में छोड़ दिया गया है।

पाकिस्तान जिन बलूच संसाधनों का लगातार दोहन करता रहा है उनमें अपनी उचित हिस्सेदारी की बात जब बलूच नागरिक उठाते हैं तो पाकिस्तान की सरकार क्रूर ताकतों एवं आतंक का सहारा लेकर उन्हें डराने-धमकाने का काम करती है।

इस प्रकार लगभग 70 वर्षों से पाकिस्तान के अधिकार में रह रहे बलूचिस्तान के तकरीबन 47 प्रतिशत घरों में आज भी बिजली उपलब्ध नहीं है। हद तो यह है कि ग्रामीण बलूचिस्तान में महिला साक्षरता दर मात्र 2 प्रतिशत है और शिशु मृत्युदर भी शेष पाकिस्तान की तुलना में 5 गुना अधिक है।

नवाब बुगती और नरेन्द्र मोदी की तस्वीरों के साथ बलूच प्रदर्शन

क्या परिग्रहण कानूनी था?

27 मार्च, 1948 को पाकिस्तानी सेना के कब्जे से पहले लगभग साढ़े सात महीने तक बलूचिस्तान स्वतंत्र था। लगभग 70 साल पहले पाकिस्तान के द्वारा निर्वासन झेल रहे पहले महत्वपूर्ण बलूच नायक प्रिंस अब्दुल करीम ने स्पष्ट तौर पर कहा था कि "किसी भी कोण से देखने पर पाकिस्तान सरकार सिर्फ और सिर्फ पंजाबी फासीवाद की प्रतिमूर्ति है जिसके बारे में जनता को कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है। यहां केवल सेना और हथियारों का ही बोलबाला है।"

जिन्ना और कलात के खान

पाकिस्तान के गठन से तीन महीने पूर्व मोहम्मद अली जिन्ना ने कलात के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार से बलूचिस्तान की स्वतंत्रता के विषय में समझौता किया था। इसमें प्रस्तावित पाकिस्तान एवं कलात के बीच संबंधों पर चर्चा हुई थी। ब्रिटिश प्रतिनिधि वायसराय एवं कलात के खान के प्रतिनिधि जिन्ना के मध्य हुई अनेक बैठकों के बाद जो नतीजा निकला था उसे दिनांक 11 अगस्त, 1947 को एक विज्ञप्ति के रूप में प्रकाशित किया गया था। जिसमें कहा गया था कि–

(क) भारत राज्य से अलग पाकिस्तान सरकार ब्रिटिश सरकार के साथ संधि–संबंधों के आधार पर कलात को एक स्वतंत्र संप्रभु राज्य मानेगी।

(ख) इस बात का कानूनी मत तलाशा जाएगा कि पाकिस्तान को विरासत में (कलात) पट्टे का अनुबंध प्राप्त है अथवा नहीं।

"We are Muslims but it (this fact) did not mean (it is) necessary to lose our independence and to merge with other (nations) because of the Muslim (faith). If our accession into Pakistan is necessary, being Muslim, then Muslim states of Afghanistan and Iran should also merge with Pakistan."

—Mir Ghaus Bux Bizenjo in 1947-48

(ग) इसी बीच पाकिस्तान और कलात के मध्य एक यथास्थिति समझौता (Stand Still) सम्पन्न हुआ।

(घ) प्रतिरक्षा, वैदेशिक संबंधों व संचार तक इस निर्णय की पहुंच को ध्यान में रखते हुए यह तय किया गया कि यथाशीघ्र कराची में पाकिस्तान व कलात के मध्य वार्ता होगी।

यथास्थिति प्रस्ताव पर खान के प्रतिनिधि मोहम्मद अली जिन्ना और प्रस्तावित पाकिस्तान के प्रतिनिधि लियाकत अली खान द्वारा हस्ताक्षर किये गए। बलूच के खान ने बलूचिस्तान को 12 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र घोषित कर दिया। नवाबज़ादा मुहम्मद असलम खान इस स्वतंत्र राज्य के प्रथम प्रधानमंत्री नियुक्त किये गये। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में एक मंत्रिपरिषद् गठित हुई। दार-उल-उमरा (उच्च सदन) और दार-उल-अवाम (निम्न सदन) को मिलाकर एक विधानमंडल गठित हुआ। जिसमें अल्पसंख्यकों का भी प्रतिनिधित्व था।

अक्टूबर, 1947 आते-आते मोहम्मद अली जिन्ना जो पाकिस्तान के कायदे आजम थे, का कलात को एक 'स्वतंत्र' एवं 'संप्रभु राज्य' की मान्यता देने के संदर्भ में मन बदल चुका था। वे चाहते थे कि खान उसी विलय-पत्र पर हस्ताक्षर करें जिस पर कि पाकिस्तान में

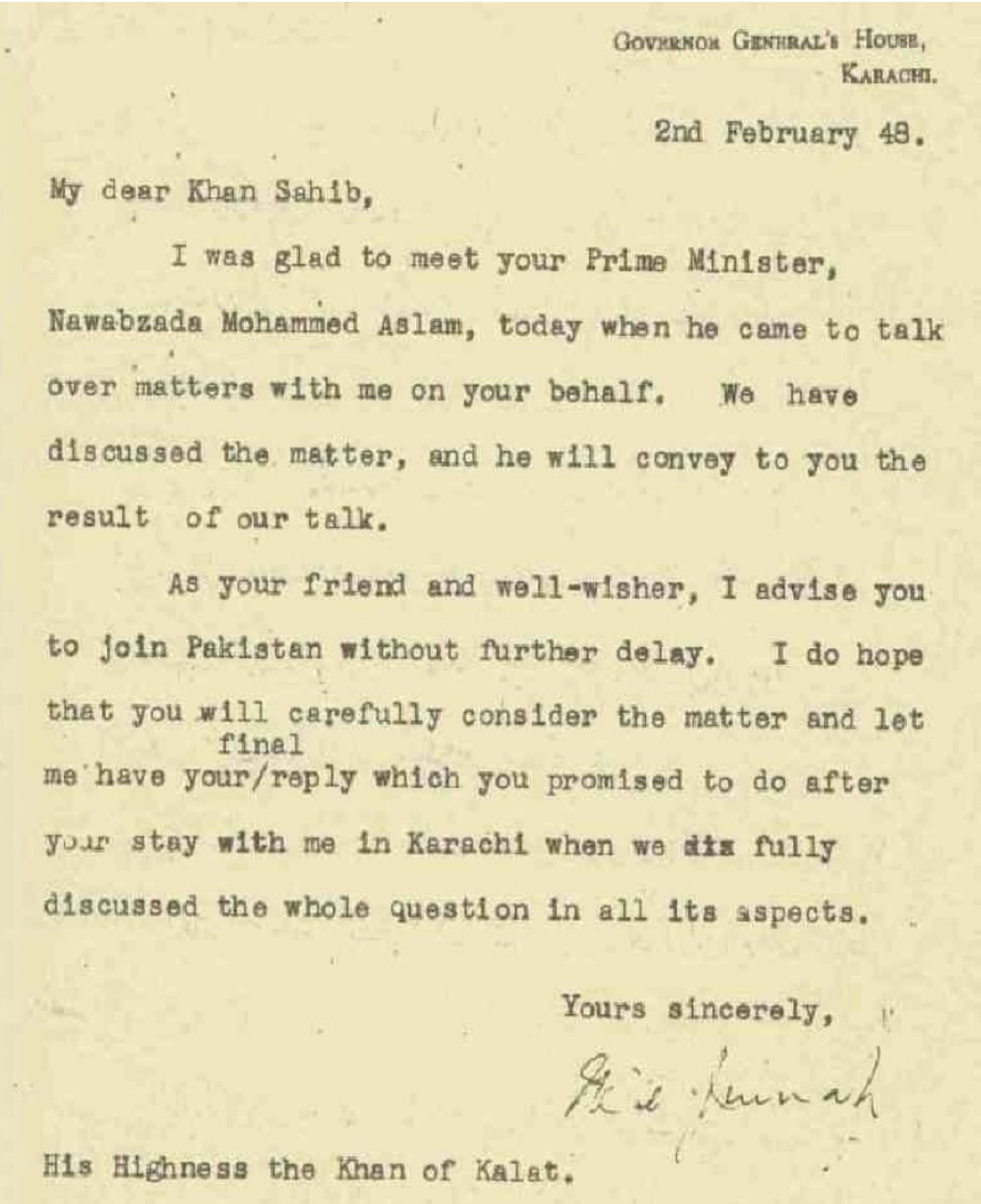

GOVERNOR GENERAL'S HOUSE,
KARACHI.

2nd February 48.

My dear Khan Sahib,

I was glad to meet your Prime Minister, Nawabzada Mohammed Aslam, today when he came to talk over matters with me on your behalf. We have discussed the matter, and he will convey to you the result of our talk.

As your friend and well-wisher, I advise you to join Pakistan without further delay. I do hope that you will carefully consider the matter and let me have your final reply which you promised to do after your stay with me in Karachi when we ~~dis~~ fully discussed the whole question in all its aspects.

Yours sincerely,

M. A. Jinnah

His Highness the Khan of Kalat.

कलात के खान के नाम जिन्ना का पत्र

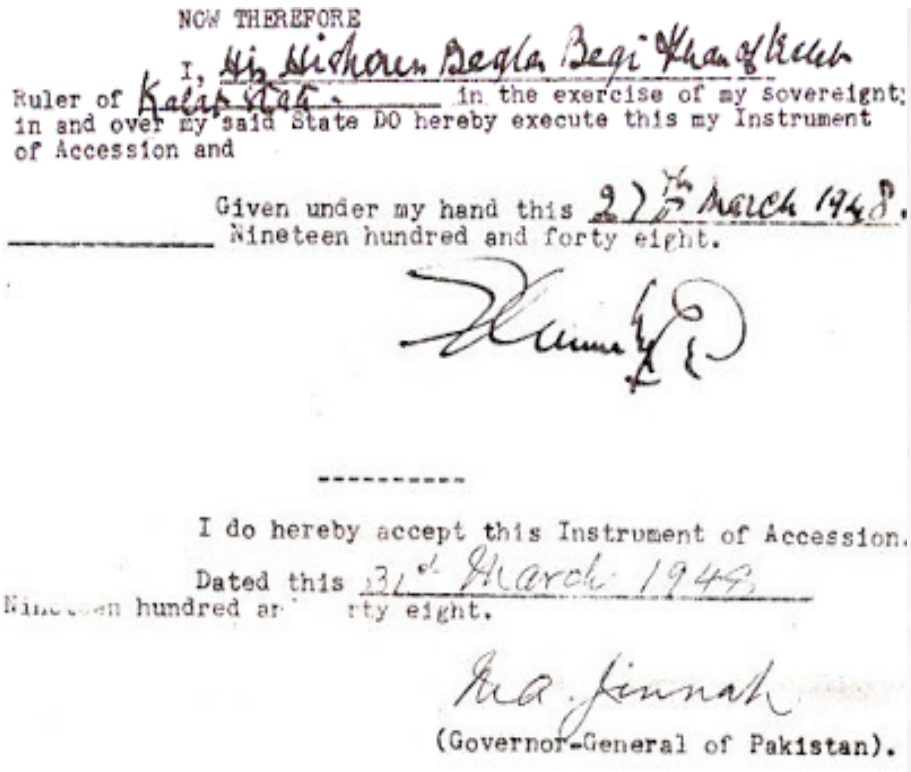

NOW THEREFORE

I, His Highness Beglar Begi Khan of Kelat

Ruler of Kelat State in the exercise of my sovereignty in and over my said State DO hereby execute this my Instrument of Accession and

Given under my hand this 27th March 1948.

Nineteen hundred and forty eight.

I do hereby accept this Instrument of Accession.

Dated this 31st March 1948

Nineteen hundred and forty eight.

M. A. Jinnah

(Governor-General of Pakistan).

कलात राज्य का विलय-पत्र

शामिल होने वाले अन्य रजवाड़ों ने हस्ताक्षर किये थे। कुछ माह पूर्व बलूचिस्तान की जिस स्वतंत्र सत्ता को खान ने प्राप्त किया था वे उस स्वतंत्रता को छोड़ने के इच्छुक नहीं थे। फरवरी, 1948 में कलात और पाकिस्तान के मध्य अनिश्चितकालीन वार्ता विराम लग गया था।

जिन्ना ने कलात के खान को लिखा, "मैं आपको अविलम्ब पाकिस्तान के साथ आने की सलाह देता हूं....मुझे, जिस समय कराची में आपके प्रवास के दौरान इस पूरे प्रश्न पर और उनके सभी पक्षों पर विधिवत् चर्चा कर आपके द्वारा किये गये वादे के मुताबिक आपका अंतिम जवाब चाहिए।" अपने जवाब में खान ने कहा कि उन्होंने विधानमंडल के दोनों सदनों दार-उल-उमरा व दार-उल-अवाम को पाकिस्तान के साथ आगामी रिश्तों के विषय में राय जानने के लिए बुलाया है, और वे इस माह के अन्त तक इस विषय पर अपने मत से सूचित करेंगे।

जब 21 फरवरी, 1948 को कलात के दार-उल-अवाम की बैठक हुई तो उसने विलय न होने का निर्णय लिया और पाकिस्तान के साथ अपने भविष्य के संबंधों को सुनिश्चित करने के लिए एक संधि करने की बात की।

26 मार्च, 1948 को पाकिस्तानी सेना को बलूच के समुद्र-तटीय क्षेत्र पासनी, जीवानी और तुर्बत पर आक्रमण के आदेश मिले। 1 अप्रैल, 1948 को पाकिस्तानी सेना ने कलात में सशस्त्र मार्च किया और कराची में घोषणा हुई कि कलात के खान पाकिस्तान में विलय हेतु सहमत हो गये हैं। यहां यह बात ध्यान देने योग्य है कि बलूचिस्तान के विधानमंडल ने पहले ही ऐसे किसी भी प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया था जो कि किसी भी रूप में बलूचिस्तान की स्वतंत्रता को समाप्त करने वाला था। कलात के खान को कलात राज्य के विलयपत्र पर हस्ताक्षर हेतु विवश किया गया था।

पाक वर्चस्व को बलूच ने कभी स्वीकार नहीं किया

बलूचिस्तान वर्तमान में पाकिस्तान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा परंतु जनसंख्या में सबसे छोटा प्रांत है। नृजातीय एवं ऐतिहासिक रूप से भिन्न बलोच लोग पूर्वी ईरान, अफगानिस्तान तथा दक्षिण-पश्चिम पाकिस्तान के इलाके में फैले हैं। 1506 ई. से 1747 ई. के बीच ये लोग ईरान अथवा भारत के साथ जुड़े हुए थे। सन् 1666 में विभिन्न बलोच राज्य संघों ने मिलकर एक बलोच राष्ट्र की संकल्पना प्रस्तुत की।

ब्रिटिश सरकार द्वारा विलय

नसीर खान के निधन के बाद ब्रिटिश साम्राज्य का बलूचिस्तान में प्रवेश हुआ। 13 नवम्बर 1839 को संप्रभु राज्य बलूचिस्तान पर ब्रिटिश साम्राज्य ने आक्रमण किया। बलूचिस्तान की राजधानी कलात की रक्षा करने के क्रम में उस समय के वित्त/राजस्व मंत्री दीवान बुचा मुल मारे गए जो तमाम बलोच सरदारों में इकलौते हिन्दू थे। 1876 में ब्रिटिश सरकार एक संधि-प्रस्ताव को प्रबंधित करने में सफल रही जिसके तहत कलात, खरान, मकरान और लासबेला का हिस्सा उन्हें प्राप्त हुआ।

सन् 1948 में पाकिस्तान द्वारा गैर-न्यायिक विलय

पाकिस्तान और कलात के मध्य यथास्थिति समझौते के तहत 1947 से कलात राज्य स्वतंत्र स्थिति में ही था लेकिन 27 मार्च, 1948 को पाकिस्तान ने बलपूर्वक कलात को अपने में मिला लिया।

Total population		
approximately 9 million		
Regions with significant populations		
Pakistan	6.2 million (2008)	
Iran	1.484 million (2009)	[1] [2]
Afghanistan	567,920 (2009)	[3]
Oman	425,000 (2009)	[4] [5]
United Arab Emirates	100,000	[6]
Kuwait	20,000 (1993)	
Qatar	13,000 (2007)	
Saudi Arabia	12,000 (2007)	
Somalia	8,200 (2007)	
Bahrain	25,000 (2009)	
Languages		
Primarily Balochi and Brahvi		
Related ethnic groups		
other Iranian peoples (Kurds • Pashtuns)		

2009 तक बलोच जनसंख्या

विद्रोह और राष्ट्रवाद का उदय

सन् 1948 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

कलात के खान को दबाव डालकर परिग्रहण के लिए मजबूर किया गया था और बान-ए-आजम के कानूनी अधिकार का अंत 15 अप्रैल, 1948 को कर दिया गया। इस जबरन विलय ने राष्ट्रवादी भावनाओं को जगाकर बलूचिस्तान में विद्रोह का नेतृत्व किया।

1958 का द्वितीय स्वतंत्रता संग्राम

राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 1955 में विविध नृजातीय समूहों के बीच के अंतराल को पाटने के लिए एक योजना तैयार हुई। इस योजना के तहत, बलूचिस्तान, सिंध, NWFP और पंजाब को एक ईकाई के तहत एकीकृत किया गया। इसके द्वारा कलात के खान के नेतृत्व में विद्रोह को रोका गया।

1962 का तृतीय स्वतंत्रता संग्राम

झालावान के जेहरी जनजाति के प्रमुख नौरोज खान ने मीर घाट पहाड़ियों में सशस्त्र प्रतिरोध शुरू कर दिया लेकिन पाकिस्तानी सेना ने कुरान की कसम खाई और नौरोज खान से हथियार डालने का आग्रह कर उन्हें समझौते के लिए तैयार कर लिया। अंततः पाकिस्तान ने उन्हें धोखा दिया और उनके बेटों को फांसी के फंदे पर चढ़ा दिया और वे भी जेल में कैद रहते हुए मर गए।

1973 का चौथा स्वतंत्रता संग्राम

पाकिस्तान के तत्कालीन निर्वाचित प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने जब बलोच की प्रांतीय सरकार को निरस्त कर वहां की सत्तासीन पार्टी एन.ए.पी. (NAP) को प्रतिबंधित किया तो यह बगावत शुरू हुई। तत्कालीन पाक वजीर-ए-आजम

ने खैर बक्स मुरी, अताउल्लाह मेंगल तथा गौस बक्स बिजेंजो जैसे प्रमुख बलूच नेताओं को जेल में डलवा दिया। इसने पाक-संघ के खिलाफ एक अन्य बगावत शुरू कर दी। 1973 की बगावत सबसे बुरी थी। इस नवजात बलूच राष्ट्रवादी आंदोलन ने कट्टरपंथी तत्वों को शामिल करते हुए मारिस और मेंगलस के नेतृत्व में गुरिल्ला युद्ध छेड़ दिया। यद्यपि इसमें हताहतों की संख्या आज भी अज्ञात है। दोनों तरफ से जारी घोषणा में करीब 5300 बलूच छापामार और 3300 पाक-सैनिक मारे गए।

सन् 2000 का पांचवा स्वतंत्रता संग्राम

सैन्य काल में बलोच नागरिकों को बिना लाभ पहुंचाए वहां के संसाधनों के निरंकुश लूट के खिलाफ JWP प्रमुख और सशक्त बलोच नेता नवाब

बलूचिस्तान का मानचित्र

बलूचिस्तान में मानवाधिकार हनन के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र में प्रदर्शन

अकबर बुगती ने 2005 में सेना के साथ एक अंतराल विकसित किया। प्रतिक्रिया स्वरूप जनरल परवेज मुशर्रफ के नेतृत्व वाली सैन्य सरकार ने बलोच लोगों में पूज्य माने जाने वाले नवाब अकबर बुगती को दिनदहाड़े एक क्रूर सैन्य हमले में मार गिराया। नवाब बुगती की हत्या ने बलोच अवाम में एक भीषण सशस्त्र प्रतिकार को जन्म दिया, जो आज भी जारी है।

बलूचिस्तान : संस्कृति, भूगोल एवं अर्थव्यवस्था

बलूच के प्रचलित रीति-रिवाजों की एक विशेष पहचान है, जो उसकी संस्कृति, धर्म, पूर्वजों, परम्पराओं और मान्यताओं का द्योत्तक है। बलूची संस्कृति और उसकी परम्पराओं के पद-चिन्ह् मेसोपोटामिया के पूर्व निशान हो सकते है, जो एक बड़े स्तर पर बलूच लोगों के मूलस्वरूप को स्वीकारता हो।

ڈ	د	ھ	چ	ج	ش	س	ٹ	ت	پ	ب	آ	ا
ڈے	دال	ھے	چے	جیم	شین	سین	ٹے	تے	پے	بے	آگلہ دار	الپ
ḍe	dāl	ḥe	che/če	jīm	šīn	sīn	t'e	te	pe	be		alip
ḍ	d	ḥ	ch/č	j	š	s	t'	t	p	b	aa/á	a
[d]	[d]	[h]	[ʧ]	[ʤ]	[ʃ]	[s]	[ʈ]	[t]	[p]	[b]	[a:]	[a]

ی	و	ٹ	ں	ن	م	ل	گ	ک	ژ	ز	ڑ	ر
یا	وا	نا	نون	نون	میم	لام	گاپ	کاپ	ژے	زے	ڑے	رے
yā	vā	n'ā	n'ūn	n'ūn	mīm	lām	gāp	kāp	jhe	ze	ṛe	re
y	v	ṇ	n'	n'	m	l	g	k	jh	z	ṛ	r
[j]	[w]	[ɳ]	[~]	[n]	[m]	[l]	[g]	[k]	[ʒ]	[z]	[ɽ]	[r]

اُو	آو	آ	اِی	اِ
ou	oo	o	ey	e
[au]	[o:]	[u]	[ai]	[e:]

बलूची वर्णमाला और उच्चारण

भाषा

प्रथम या द्वितीय भाषा के रूप में बलूची पश्चिमी, दक्षिणी और मध्य एशिया में विशेषरूप से अफगानिस्तान, ईरान, बलूचिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और संयुक्त अरब अमीरात के लगभग 70 लाख लोगों द्वारा व्यवहार में लायी जाती है। यह एक ईरानी भाषा है जो कि एक बड़े भारोपीय भाषा परिवार का उपसमुच्चय है।

बलूची की तीन मुख्य बोलियां है- पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी बलूची। पूर्वी बलूची मूलतः सिंधी भाषा से प्रभावित है और यह अधिकतर पाकिस्तान के क्षेत्रों में बोली जाती है, पश्चिमी बलूची मूलतः फारसी से प्रभावित है और यह अफगानिस्तान, पाकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान के

क्षेत्रों में अधिकाधिक बोली जाती है तथा दक्षिणी बलूची ज्यादातर भारत में बोली जाती है।

सदियों तक बलूची का प्रयोग मौखिक भाषा के रूप में ही होता रहा था। 19वीं सदी के बाद से इसमें लिखने-पढ़ने का काम हो रहा है। प्रारम्भ में, यह भाषाविदों द्वारा तैयार की गई पद्धति पर आधारित होने के कारण लैटिन वर्णमाला में लिखी जाती थी। वर्तमान में यह (बलूची) अरबी/उर्दू में लिखी

बलूचिस्तान की उपभाषाएं

जाती है। बलूची से इतर पश्तों और ब्राहुई भी दो अन्य भाषायें हैं जो बलूचिस्तान में रहने वाले अधिकतर लोगों द्वारा व्यवहार में लायी जाती हैं।

बलूची परिधान में वहां की महिलाएं

संस्कृति

बलूचिस्तान की सांस्कृतिक विरासत अत्यन्त समृद्ध और उतनी ही अधिक मूल्यवान भी है। वे सदियों से बहुत हद तक अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाने में सफल भी रहे हैं। इसका आधार उस क्षेत्र के खानाबदोश स्वदेशी संस्कृतियों में ही है।

धर्म की तरफ बलूची राष्ट्र का अनोखा उपागम उसकी अपनी राष्ट्र-केन्द्रित संस्कृति और परम्परा का

बलूच महिलाओं के परम्परागत आभूषण

ही परिणाम है जो धर्म को एक विश्वास के रूप में देखता है। इतिहास के पन्नों में बलूची प्राचीन भारतीय-ईरानी धर्म 'पारसी' को मानते थे; किन्तु पिछले कुछ वर्षों में बलूचियों ने सुन्नी इस्लाम को अपनाना शुरू कर दिया है। ज्यादातर बलूची अपने पड़ोसी मध्य एशियाई भाईयों की तरह मांस, चावल और सब्जियों पर ही आश्रित रहते हैं।

वस्तुतः बलूची अपने परिच्छेदिक और पारंपरिक पोशाकों के लिए जाने जाते हैं। शहर में पुरूष प्रायः लम्बी कमीज़, लम्बी बहोली और ढीली पैंट पहनते हैं, जिसे 'पाघ' की संज्ञा दी जाती है। बलूची औरतें भी लम्बी, ढीली पोशाकों के साथ लम्बी बहोली को पैंट के ऊपर पहनती हैं। प्रायः औरतों की चोली और बहोली शीशें के महीन टुकड़ों, सुई की कढ़ाई और जटिल बुनाई के द्वारा तैयार की जाती है। महिलायें प्रायः सिर को दुपट्टे से ढककर रखती हैं जिसे स्थानीय भाषा में 'सरीग' कहा जाता है। पारंपरिक तौर पर बलूची महिलायें गहनों में सोने का कंगन और हार पहनती है, पर गहनों में उन्हें सबसे प्रिय 'डोर' है, जो कानों की भारी बालियां होती हैं। महिलायें प्रायः स्थानीय जौहरियों द्वारा अलग-अलग रंग-रूप में सोने की निर्मित जड़ाउ पिन 'टसनी' का प्रयोग अपने वस्त्रों को दोनों तरफ से एक साथ बांधने के लिए करती हैं। प्राचीनकाल में विशेषतः पूर्वी इस्लामी युग के दौरान बलूच स्त्रियों द्वारा अलग-अलग महोत्सवों पर लोकनृत्य और लोकगान को प्रदर्शित करना आम बात थी।

संगीत और नृत्य

हमेशा से ही लोकसंगीत ने बलूचिस्तान की परम्परा में अपनी अहम भूमिका पेश की है। बलूची संगीत और वाद्ययंत्र फारसी संगीत की उसी शाखा से संबद्ध है, जिससे कुर्दों, लुर्स, ताजिक, ईरानी तथा कुछ अन्य भी संबंध रखते हैं। बलूची संगीत

परम्परा की एक अहम देन बच्चों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी लोरी गायन और योद्धाओं की स्तुति द्वारा ज्ञान का स्थानांतरण करना है। पुरूष और स्त्री दोनों का एक साथ लोकसंगीत में भाग लेना, बलूची संस्कृति में इस्लाम पूर्व लोकसंगीत के महत्व को दर्शाता है। कई वर्षों तक चले युद्ध तथा हमलों के कारण बलूची संगीत पर रोक लग गई और आगे चलकर 21वीं सदी में वह प्रचलित नहीं हो पायी। बलूची संगीत में सबसे अधिक इस्तेमाल किये जाने वाले यंत्रों में 'तन्बुर' और लम्बी गर्दन वाले तम्बूरे हैं। तम्बूरे ईसा पूर्व तीसरी सहस्त्राब्दी या फिर अक्काड़ियन युग से ही मेसोपोटामिया की सभ्यता में विद्यमान माने जाते हैं। एक बड़ी बेलनाकार ड्रम 'दोहोल' तथा एक लोक वायलिन 'सरोज' का प्रयोग स्थानीय लोगों द्वारा खेलने के लिए किया जाता है।

परम्परागत वेष में बलूच लड़की

एक स्वीडिश लोक बैंड 'गोलबैंग' (जिसका फारसी में अर्थ 'बुलबुल का गाना' है) ने पश्चिमी देशों में बलूची लोकसंगीत का खूब प्रसार किया है। बलूच लोगों द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले प्रचलित पारंपरिक नृत्य 'दो-चापी' और 'लेवा' हैं। 'दो चापी' प्राचीन फारसी नृत्य है जो लोगों द्वारा समूह में चक्र बनाकर, तालियां बजाकर और नृत्य करते हुए किया जाता है। 'लेवा' भी ऐसा ही बलूची नृत्य है जो लोगों के समूह द्वारा घेरा बनाकर और हाथ घूमा-घूमाकर किया जाता है।

परम्परागत बलूची नृत्य

मस्कट में परम्परागत लोक संगीत

ग्वादर बन्दरगाह का दृश्य

अर्थव्यवस्था

बलूचिस्तान की अर्थव्यवस्था मुख्यत: प्राकृतिक गैस, कोयला एवं खनिजों पर आधारित है। 1972 से बलूचिस्तान की अर्थव्यवस्था में तो 2.8 गुनी बढ़ोत्तरी हुई है परन्तु बलूची अवाम आज भी गरीबी, भूखमरी एवं अशिक्षा की मार झेलने को अभिशप्त है। बलूचिस्तान के 'चागई' जिले के 'रिको दिक' नामक स्थान पर विश्व की सबसे बड़ी ताम्बे की खदानों में से एक पाया गया है, जिसकी कीमत लगभग 3.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर है।

बलूचिस्तान के पूर्वी इलाके में सीमित मात्रा में खेती होती है जबकि अरब सागर के तटीय इलाकों में मछली पकड़ना यहां के लोगों की अन्य आर्थिक गतिविधि है। मछली पकड़ना एवं उसका व्यापार करना यहां के स्थानीय लोगों की जीविका का एक प्रमुख साधन है परंतु जैसे-जैसे इस इलाके का रणनीतिक महत्व बढ़ता गया वैसे-वैसे यहां का मत्स्य-संग्रहण क्षेत्र घटता गया और आज हालात यह है कि यहां के मछुआरे शहरों में मजदूर बनकर रह गए हैं।

बंगाली लोगों की तरह बलूचों को भी एक कच्चा-माल आपूर्तिकर्ता के रूप में देखा जाता रहा है। बलूच मुक्ति संघर्ष का वर्तमान दौर यहां के सामाजिक-आर्थिक कारणों से ही प्रेरित है। बलूचिस्तान में स्थित सुई गैस क्षेत्र से ही पाकिस्तान में प्राकृतिक गैस की आपूर्ति होती है, पंजाब और सिंध क्षेत्र में स्थापित उद्योग इसी पर आधारित हैं परन्तु स्वयं बलूचिस्तान इससे वंचित है। बलूची अवाम को बेहतर नौकरी, रॉयल्टी, आधारभूत संरचना और औद्योगिक विकास का आश्वासन दिया गया परन्तु गैस, ताम्बा, चांदी, सोना और कोयला जैसे खनिजों की रॉयल्टी का कोई स्वीकृत रास्ता नहीं निकाल सका है।

भूगोल

बलूचिस्तान 347,190 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में फैला है, जो कि पाकिस्तान के कुल क्षेत्रफल का 43.3 प्रतिशत है। बलूचिस्तान पूर्व में सुलेमान एवं किरथर पहाड़ियों से, पश्चिम में चगाई की पहाड़ी से तथा उत्तर में तोबा काकर की पहाड़ी से घिरा है जबकि दक्षिण में यह अरब सागर से घिरा हुआ है।

यहां की कुल जनसंख्या 10 मिलियन है जो कि चार प्रमुख समूहों बलूच, पश्तून, मकरानी एवं बरूही में विभक्त है। वर्तमान में, बलूची अल्पसंख्यक हो गए हैं, जबकि पश्तूनी जनसंख्या बढ़कर बहुसंख्यक हो गई है। यह जनांकिकी बदलाव दो कारणों से आई है। पहला कारण है 1980 के दशक में रूस-अफगान युद्ध के कारण पश्तून शरणार्थियों की बढ़ती हुई संख्या तथा दूसरा कारण है- ग्वादर पोर्ट का विकास। ग्वादर पोर्ट के विकास के कारण जहां एक ओर पश्तून आबादी आकर्षित होकर यहां बड़े पैमाने पर बस रही है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक-आर्थिक विषमता के कारण स्थानीय बलोच लोग अपनी संपत्ति पश्तूनों के हाथ बेचकर कराची में बस जाने के लिए मजबूर हैं।

ग्वादर शहर बलूच अस्मिता के लिए एक अन्य चुनौती बनकर उभरा है जहां बाहरी प्रांतों से लगभग 5 मिलियन आबादी यहां आकर बस गई है जबकि यहां कि कुल आबादी 12-13 मिलियन है। ऐसे में जनांकिकीय बदलाव होना स्वाभाविक है।

ब्राहुई एक द्रविड़ भाषा है

बलूची के अलावा ब्राहुई बलूचिस्तान में बोली जाने वाली दूसरी प्रमुख भाषा है। इसके बोलने वालों की संख्या लगभग 20 लाख बलूचिस्तान में, 2 लाख के आसपास अफगानिस्तान में और करीब 10 हजार ईरान में हैं। ब्राहुई उत्तरी द्रविड़ परिवार की भाषा है। एमबी अमेनिओं ने अपनी पुस्तक 'द्राविड़ियन इटोमोलोजिकल डिक्शनरी' में ब्राहुई और अन्य द्रविड़ भाषाओं में 250 से भी अधिक शब्दों के एक समान होने का उल्लेख किया है। यद्यपि ब्राहुई बहुत हद तक बलूची से प्रभावित भी हैं; फिर बहुत सारे विश्वकोश और आकृति विज्ञान की शाखाओं ने इसकी पहचान द्रविड़ के रूप में ही की है। कुछ विद्वानों का मत है कि जब द्रविड़ बोलने वाले अधिकतर लोग दक्षिण भारत की ओर जाने लगे तब उनमें से कुछ ब्राहुई बोलने वाले पीछे छूट गये जिन्हें अवशेष समूह की संज्ञा दी गयी है, जबकि कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि ब्राहुई बोलने वाले पहले दक्षिण भारत के अंतिम छोर पर गये और फिर उत्तर-पश्चिम दिशा की ओर वापस लौट आये जो कि वर्तमान में उनका बलूचिस्तान है। ब्राहुई लोग स्वयं को 14वीं सदी में भारत के प्रवासी बतलाते हैं। भाषायी विश्लेषण भी समर्थन करता है कि वे इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत हाल ही में प्रवासी बने हैं।

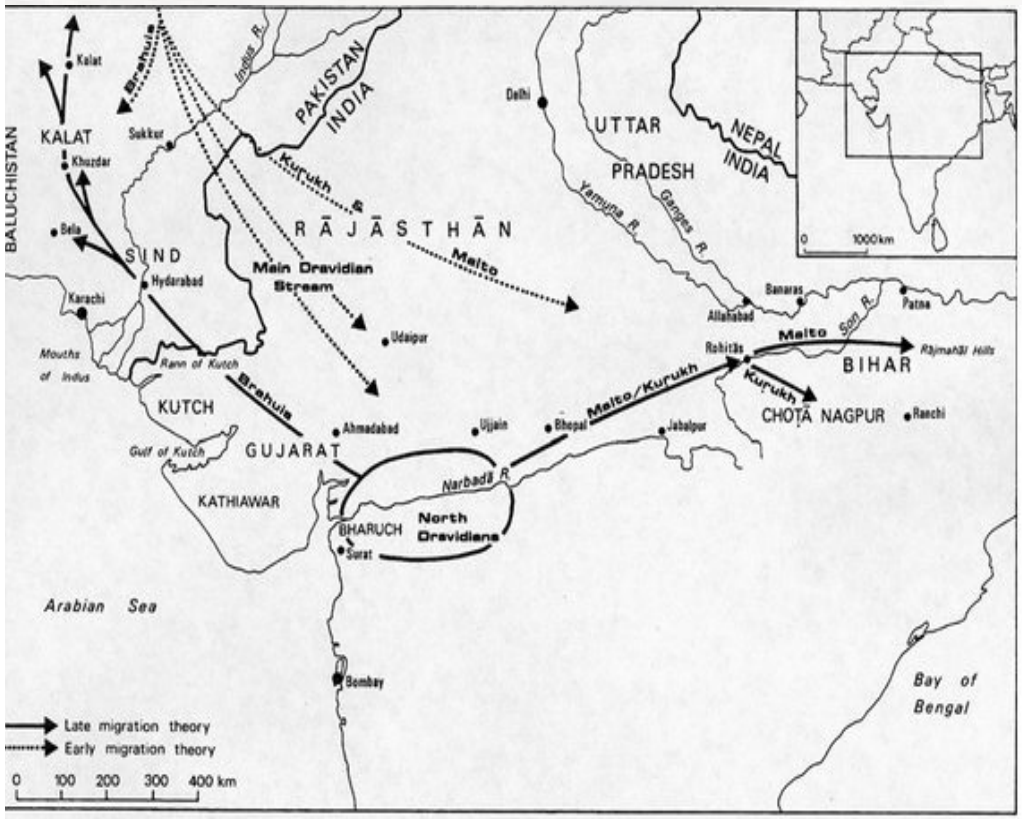

Source: Zaefenbein, Josef. "A Periplus of the Brahui Problem".Studia Iranica 1987

ब्राहुई लोगों का प्रवास

बहुलतावादी समाज

जातीय तौर पर बलूचिस्तान एक बहुलतावादी समाज है। बलूचिस्तान में समाज के बहुलतावादी चरित्र का प्रभाव भी दूसरे जातीय-भाषाई समुदायों के अस्तित्व पर पड़ता है। प्राचीनकाल से बलूचिस्तान में हिन्दुओं की उपस्थिति के कई ऐतिहासिक दस्तावेज हैं। ऐसा माना जाता है कि 712 ई. में अरबों के आक्रमण से पूर्व बलूचिस्तान में हिन्दुओं ने शासन किया है। बलूचिस्तान में हिन्दुओं का बहुमत जातीय बलूच और बलूच समाज के अभिन्न अंग हैं। यहां, राज्य-समर्थित समूहों द्वारा हिन्दुओं को इस्लाम कबूल करने के लिए उत्पीड़न और अत्याचार का सामना करना पड़ा है। अक्टूबर, 2012 में जब धार्मिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ घटनाओं में वृद्धि होती गयी; तब स्वतंत्र बलूचिस्तान आंदोलन के अधिनायक हिर्बियार मार्री ने पाकिस्तान-समर्थित धार्मिक और आपराधिक समूहों के खिलाफ एक सार्वजनिक बयान जारी किया और कहा कि बलूच लोगों ने हमेशा से बलूचिस्तान में धार्मिक अल्पसंख्यकों की रक्षा की है। इसी तरह 2013 में भी बलूच मुक्ति सेना ने हिन्दू बलूच समुदाय पर निशाना साधने वाले पाकिस्तान-समर्थित आपराधिक समूहों के खिलाफ बयान जारी किया। बलूच मुक्ति सेना के प्रवक्ता मीर बलूच ने चेतावनी दी कि 'जो कोई भी बलूच की धरती पर हिन्दू समुदाय को परेशान करेगा उसके साथ राष्ट्रीय शत्रु जैसा व्यवहार किया जाएगा क्योंकि इस तरह के संगीन अपराध बलूच सेना के सिद्धांतों के खिलाफ हैं।'

हिन्दू दर्शन के सहयोग से बलूच ने हमेशा गैर-मुस्लिम भाईयों को बलूच राष्ट्र में बराबर का हिस्सेदार के रूप में देखा है। विभाजन के समय जब हिन्दू मंदिरों और गिरजाघरों को पाकिस्तान में मस्जिद में परिवर्तित किया गया तब बलूच लोगों ने ही हिन्दू मंदिरों को बचाया और संरक्षित किया।

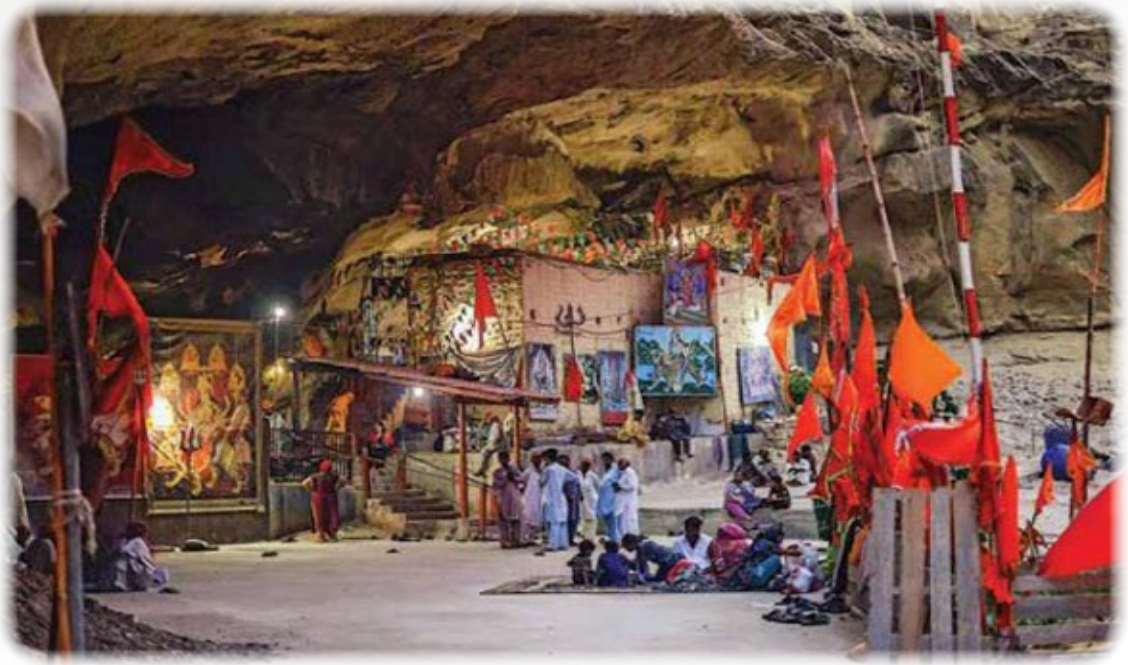

माता हिंगलाज मन्दिर का दृश्य

नानी-की-हज

बलूचिस्तान में हिन्दुओं के प्रसिद्ध तीर्थस्थान

बलूचिस्तान में हिन्दुओं के दो ऐतिहासिक और प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं, जिनका संबंध प्राचीनकाल से है। पहला हिंगलाज मंदिर है, जो बलूचिस्तान के लास्बेला जिले में एक पहाड़ी ट्रैक में स्थित है और दूसरा कलात शहर में काली देवी के मंदिर के नाम से जाना जाता है।

हिंगलाज मंदिर एक शक्तिपीठ है जिसे माता हिंगलाज के नाम से जाना जाता है। भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, तिब्बत, भूटान और बलूचिस्तान में कुल मिलाकर शक्तिपीठों की संख्या 51 है। कराची में नाथ पंथी अखाड़े से माता हिंगलाज के लिए तीर्थयात्री हर वर्ष भाग लेते हैं। ये तीर्थसमूह एक छदिआर (अखाड़े से पवित्र कर्मचारियों के वाहक) के अनुरक्षण में होते हैं। स्थानीय बलूची जनजातियां भी तीर्थयात्रा के इस जुलूस में शामिल होती हैं। यह परम्परा इस्लाम पूर्व युग से चलती आ रही है जिसे वे 'नानी-की-हज' कहते हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता के निशान

सिंधु घाटी सभ्यता भारतीय महाद्वीप में सर्वत्र फैली हुई थी। संसार के पुरातात्विक मानचित्र में बलूचिस्तान ही वह जगह है, जहां से इस सभ्यता का उद्‌गम होता है। बलूचिस्तान के सिवि शहर से 30 किलोमीटर पश्चिम और क्वेटा से 120 किलोमीटर दक्षिण–पूर्व में स्थित मेहरगढ़ एक महत्वपूर्ण जगह है, जहां कि उत्खनन के उपरांत कृषि–सभ्यता के विकास का पता लग पाया।

8000 ई. पू. में मेहरगढ़ प्राचीन आर्यों की शहरी संस्कृति थी; जिसकी आबादी लगभग 25,000 थी। मेहरगढ़ में पुरातात्विक साक्ष्य के उपरांत ही एशिया के अन्य जगहों पर सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख शहरों–हड़प्पा और मोहनजोदड़ों के विषय में जानकारी मिली है। मेहरगढ़ के स्थल पर पुरातात्विक अनुक्रम 11 मीटर से अधिक गहरा है जो कि सातवीं और तीसरी सहस्त्राब्दी ईसा पूर्व के बीच की अवधि में फैला हुआ प्रतीत होता है। यह आर्यपूर्व शहरी संस्कृति की उन्नत व्यवस्था आश्चर्यचकित कर देने वाली थी जिसमें सार्वजनिक स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया गया था तथा सड़कों को बड़े सुन्दर ढंग से बिछाया गया था, साथ ही घरों को भी सुंदर और हवादार बनाया गया था। उस युग के लोग ऊनी या सूती कपड़ों को पहना करते थे। ज्यादातर पुरुषों ने पगड़ी पहनी थी, जो अब भी बलूचिस्तान में प्रचलन में है।

7000 ई. पू. मेहरगढ़ के किले का एक साक्ष्य

भारत में लघु बलूचिस्तान

उत्तर प्रदेश के बागपत जिले में जिला मुख्यालय से करीब 15 किलोमीटर की दूरी पर बिल्लोचपुरा गांव स्थित है। तकरीबन 8000 लोग इस गांव में रहते हैं। इस गांव से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर सबसे नजदीकी शहर अमीन नगर सराय है। देखने में तो यह भी उत्तर प्रदेश का एक सामान्य सा गांव ही लगता है, परंतु रेखांकित करने वाली बात यह है कि यहां के निवासी बलोच के ही वंशज हैं। सदियों से शांतिपूर्वक रह रहे इस गांव के ग्रामीण अचानक "बलूचिस्तान की मुक्ति" के मुद्दे पर आकर्षण के केन्द्र बन गए हैं। अभी हाल ही में बलूचिस्तान की आजादी को लेकर इस गांव के ग्रामीणों के सामूहिक समर्थन हेतु अपील करने के लिए बलोच आंदोलन के प्रमुख नेता मज़दक दिलशाद अपनी पत्नी नाईला के साथ बागपत पहुंचे। पाकिस्तानी सेना द्वारा बलोच जातियता के ऊपर हो रहे अत्याचारों को सुनकर यहां के लोग चौंक पड़े। भारतीय कानून के दायरे में रहते हुए ये लोग अपने बलोच भाईयों की हर संभव मदद के लिए तैयार हैं। यहां के ग्रामीणों ने बलूचिस्तान में हो रहे रक्तपात के विरुद्ध पाकिस्तानी दूतावास के समक्ष प्रदर्शन करने एवं ज्ञापन सौंपने का निर्णय लिया है।

बिल्लोचपुरा गांव के निवासी

बलूचिस्तान का रणनीतिक महत्व

पाकिस्तान के अंदर बलूचिस्तान का अपना विशेष रणनीतिक महत्व है। यह तेल-समृद्ध खाड़ी देशों को दक्षिण-पूर्व एशिया और चीन के साथ-साथ एशिया के अन्य भागों से भी जोड़ता है। यही कारण है कि अरब सागर और मलक्का जलसन्धि में अमेरिकी और भारतीय प्रभाव को संतुलित करने के लिये चीन बलूचिस्तान में ग्वादर पोर्ट का विकास कर रहा है। चीन खाड़ी देशों से पेट्रोलियम का आयात पहले दक्षिण चीन सागर के क्षेत्र से करता रहा है जिसमें उसे लगभग 45 दिनों का समय लगता था अब ग्वादर पोर्ट का विकास हो जाने पर चीन-पाक आर्थिक गलियारे के माध्यम से इसी काम में चीन को केवल 10 दिनों का समय लगेगा। ऐसे में, बलूचिस्तान और खासकर ग्वादर पोर्ट का अपना विशेष भू-रणनीतिक एवं सामरिक महत्व है।

अरब सागर में ग्वादर बन्दरगाह का रणनीतिक स्थान

बलूच का स्वातंत्र्य आंदोलन एवं दमित राष्ट्रीयता

बलूच मुक्ति चार्टर के मुख्य बिन्दु

बलूच का राष्ट्रीय संघर्ष विदेशी शासन द्वारा बलूचिस्तान पर अवैध आधिपत्य का उन्मूलन करना है। यह संघर्ष जीवन, संरक्षण और आत्म-निरीक्षण के अधिकार जैसे सबसे मूलभूत सिद्धांतों पर टिका है। यह स्वयं में एक धर्मनिरपेक्ष आंदोलन है जो लैंगिक समता, सामाजिक आर्थिक-सांस्कृतिक समानता एवं धर्म तथा अभिव्यक्ति की आजादी को स्वीकार करता है।

बलूच की जनता के हाथों में ही बलूच राष्ट्र की बागडोर हो; यह बलोच मुक्ति संग्राम का एक निर्णायक लक्ष्य है।

- बलूच का राष्ट्रीय संघर्ष एक स्वतंत्र एवं लोकतांत्रिक बलूचिस्तान चाहता है, जहां सभी लोग देश के भीतर एवं बाहर स्वतंत्रतापूर्वक घूम-फिर सके। यह संघर्ष किसी भी प्रकार के बलोच और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के समर्थन को महत्व देता है ताकि स्वतंत्र एवं संप्रभु बलूच राष्ट्र को प्राप्त किया जा सके।

- कोई भी व्यक्ति, संस्था या राजनीतिक संघ जो इस चार्टर को स्वीकृति प्रदान करते हैं वे पाकिस्तान की मिथ्या संसदीय प्रणाली में शामिल नहीं हो सकते हैं।
- बलूचिस्तान के नजरबंद और गायब लोगों की नियति को जांचकर इसके दोषियों को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय तक लाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों के निर्देशन में एक समिति गठित की जानी चाहिए।
- अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का यह कानूनी और नैतिक दायित्व है कि वह बलूचिस्तान में हस्तक्षेप करे ताकि अवैध आधिपत्य का खात्मा किया जा सके।
- विभिन्न भागों में बंटे हुए बलूचिस्तान को पुनः एकीकृत करना तथा एक राष्ट्रीय बलूच राज्य की पूर्ण संप्रभुता को स्वीकृत करना इस राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष का लक्ष्य है।

Wahe Watan O Hushkien Dar
The fatherland even barren is worth anything
—Balochi saying

बलूच स्वातंत्र्य-आंदोलन का नया अध्याय

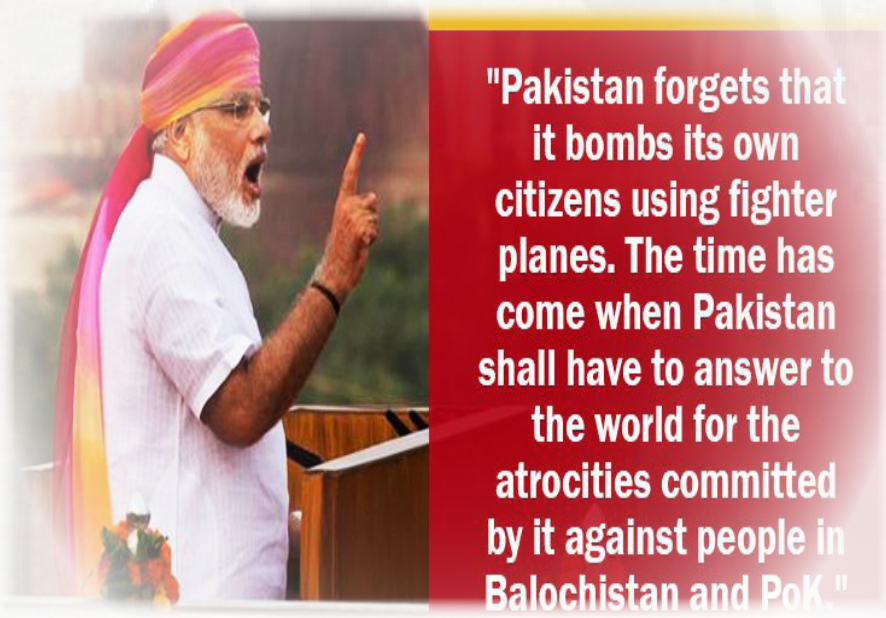

15 अगस्त 2016 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

रंगभेद, नस्लवाद, मानवाधिकारों के उल्लंघन और राष्ट्रीयताओं को दबाने के विरूद्ध भारत का हमेशा से एक बेहतरीन रिकॉर्ड रहा है। 1927 में जवाहरलाल नेहरु ने ब्रूसेल्स में रंगभेद विरोधी और दमित राष्ट्रीयताओं के संदर्भ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शिरकत की। अपने औपनिवेशिक दौर में भी भारत दबी हुई अफ्रीकन राष्ट्रीयताओं और उपनिवेशों की मुक्ति के लिए हमेशा खड़ा रहा है। इसलिए पंजाबी आधिपत्य वाले पाक सरकार से बलूचिस्तान की मुक्ति का नैतिक समर्थन भारतवर्ष का एक स्वभाविक कदम है।

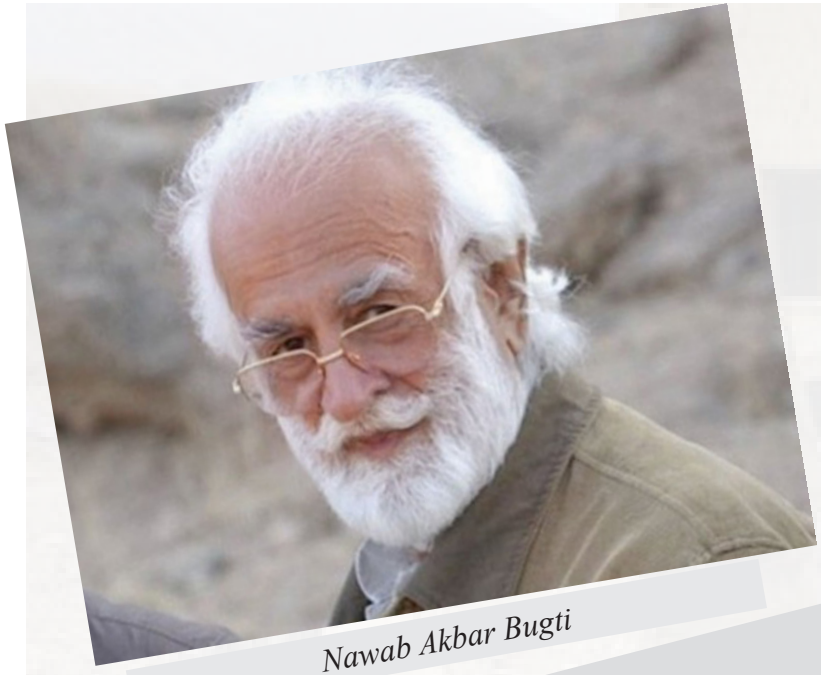

Nawab Akbar Bugti

PM's Speech is "very encoraging" International Political scene is changing in support of Baluch.

Pakistan's involvement in terror attacks and to cause destruction in Kashmir is exposed.

Extending support to Baloch must be crtucial for India's foriegn policy.

— Brahumdagh Bugti, President, Baluch Republican Party

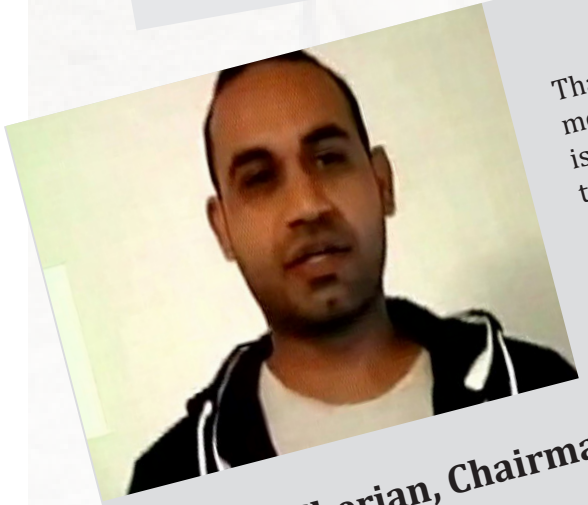

Thank PM and Indian media for supporting the issue Internationally hope to celebrate 11th August and 15th August together in Future.

—Ashraf Sherjan, Chairman, Baluch Republican Party

Pakistan must be held accountable for forcefully occupying land of Balochistan and for voilating Human Rights.

—Munir Mengal,
Baluch Voice Foundation President

मातृभूमि की मुक्ति को समर्पित बलूच संगठन

दुनियाभर में पाकिस्तान से बलोच नागरिकों की मुक्ति के लिए कई संस्थाएं मजबूती से कार्य कर रही हैं। इनमें से कुछ प्रमुख संगठनों का परिचय इस प्रकार है:-

बलूच रिपब्लिकन पार्टी (बी.आर.पी.)

बलूच रिपब्लिकन पार्टी बलूच की राष्ट्रवादी पार्टी है जिसके नेता ब्रह्मदाग खान बुगती हैं। यह पार्टी पाकिस्तान से स्वतंत्रता की आकांक्षी है। ब्रह्मदाग खान बुगती के द्वारा इसकी स्थापना 2008 में हुई। यह पार्टी आत्मसम्मान के अधिकार के लिए संघर्ष कर रही है ताकि नवाब अकबर खान बुगती के बलोच के संसाधनों की पुनर्वापसी के लक्ष्य को हासिल किया जा सके। यह पार्टी संस्थापक के किसी भी सिद्धांत और दिशा-निर्देशों के साथ समझौते न करने को लेकर प्रतिबद्ध है।

बलूच लिबरेशन फ्रंट (बी.एल.एफ.)

बलूच लिबरेशन फ्रंट एक अलगाववादी राजनीतिक सैन्य संगठन है जिसकी स्थापना जुम्मा खान मारी ने 1964 में दमिश्क में की। वर्तमान में यह पार्टी पाकिस्तानी सरकार से स्वतंत्र बलूचिस्तान की मांग को लेकर आंदोलन कर रही है। फिलहाल इस पार्टी के वर्तमान नेता डॉ. अल्लाह नज़र पार्टी को सशक्त और प्रभावशाली बनाने के लिए निरंतर लगे हुए हैं ताकि संघर्ष एवं कूटनीति के द्वारा पाकिस्तान को पीछे धकेलकर एक स्वतंत्र बलूचिस्तान की पहचान हो सके।

बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बी.एल.ए.)

'द बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी' को 'बलोच लिबरेशन आर्मी' के नाम से भी जाना जाता है। यह पाकिस्तान में एक लड़ाकू अलगाववादी समूह है। सन् 2006 में पाकिस्तानी इस्लामिक गणराज्य द्वारा इसे एक आतंकी समूह के रूप में निर्दिष्ट किया गया। 'द बलूच लिबरेशन आर्मी' चर्चा में उस समय आई जब सन् 2000 की गर्मियों में कई पाकिस्तान प्रतिष्ठानों पर बमबारी की एक श्रृंखला देखने को मिली, जिसकी जिम्मेदारी इस संगठन ने ली। यह संगठन पाकिस्तान के निर्माण के इस तर्क से सहमत नहीं है कि सभी मुसलमान समान हैं और उनकी रचना समान रूप से हुई है बल्कि धार्मिक अस्मिता के बजाय यह संगठन जातीय अस्मिता को ज्यादा तवज्जो देता है। 'द बलूच लिबरेशन आर्मी' का साफ मानना है कि पाकिस्तान में धन एवं संसाधनों का असमान वितरण होता है, जिसका सबसे अधिक लाभ पंजाबी लोग उठाते हैं।

बलूचिस्तान स्टूडेन्ट्स आर्गेनाइजेशन (बी.एस.ओ.)

बलूचिस्तान स्टूडेन्ट्स आर्गेनाइजेशन का संबंध वहां के 'यूथ एजुकेशनल फोरम' से है जिसका गठन 1961 में हुआ; कलात के खान द्वारा बलूच राष्ट्रवाद का मुद्दा उठाने पर जब उन्हें पाक सेना द्वारा गिरफ्तार किया गया, ठीक उसके तीन वर्षों के बाद इसका गठन हुआ। पुनः औपचारिक रूप में इसका गठन 1967 में लाहौर में हुआ। डॉ. अल्लाह नज़र ने अपने कॉलेज के समय में ही वर्ष 2002 में बी.एस.ओ. की स्थापना की। ये वृहत बलूचिस्तान के लिए सशस्त्र संघर्ष में आस्था रखते हैं। स्वतंत्र, स्वायत्त एवं संप्रभु बलूच राष्ट्र की स्थापना ही इस संगठन का प्राथमिक लक्ष्य है। इसके लिये यह संगठन बलूच छात्रों को एक साथ एक प्लेटफॉर्म पर खड़ा कर उन्हें लोकतांत्रिक राजनीतिक आंदोलनों के लिए तैयार करता है ताकि बलूच राष्ट्रीयता को स्वायत्त एवं संप्रभु बनाया जा सके। बी.एस.ओ. बलूच छात्रों को बलूचिस्तान के इतिहास, सभ्यता, संस्कृति, संगीत और साहित्य से परिचित कराकर उन्हें एकीकृत करता है ताकि लोकतांत्रिक तरीके से बलूच की मुक्ति के लिए संघर्ष किया जा सके। इसके लिए ये लोग स्थानीय बलूची और ब्रारुही भाषा में प्रचार सामग्री का प्रकाशन और वितरण भी करते हैं।

बलूचिस्तान में पाकिस्तान की बर्बरता एवं महिला उत्पीड़न

पाकिस्तानी सेना, अर्द्धसैनिक बलों और खुफिया एजेंसियों के द्वारा बलूच नागरिकों पर हो रहे अत्याचारों और बेरहम सैन्य कार्रवाईयों के कारण बलूचिस्तान विश्व मानवाधिकार मानचित्र पर एक धब्बे की तरह है। पाकिस्तान के द्वारा जबर्दस्ती विलय के समय से ही बलूचिस्तान समर्थकों को राज्य के दमन को झेलना पड़ रहा है। पाक सेना की हिरासत में 23,000 से ज्यादा बलूच नागरिक गायब कर दिए गए जबकि तकरीबन 5000 नागरिकों का कत्ल कर दिया गया।

मानवाधिकार संगठनों और मीडिया को बलूचिस्तान में पाक सरकार द्वारा अनुमति नहीं मिली है ताकि वे सच्चाई का पर्दाफाश नहीं कर सकें। सैन्य हिरासत में लिए गए आंदोलनकारियों में 115 लोगों को मार दिया गया जबकि अकेले 2016 में 522 लोग सुरक्षाबलों द्वारा जबर्दस्ती नजरबंद कर दिए गये। बलूच नागरिकों के आत्मसम्मान को कुचलने के लिए अपहरण, बलात्कार और महिलाओं के इज्जत पर हमला जैसे हथकंडों का सहारा लिया गया। पाकिस्तानी सेना द्वारा बलूच महिलाओं का अपहरण कर उनका बलात्कार किया जाना आम बात है। हजारों की संख्या में बलूच महिलाओं को अगवा किया गया है, जिनकी कोई खोज-खबर नहीं है।

'मारो और फेंक डालो' की नीति से पीड़ित

"If you see the sun red... any redness in flowers.
These must be the blood of my people"
—Ghulam Rasool Mulla (1939)

बलूच नागरिकों के खिलाफ पाक सेना मानवीय अत्याचारों के वीभत्स तरीके अपनाती आ रही है। राजनीतिक कैदियों को पदच्युत और बदनाम करने के साथ-साथ पाक सेना कैदियों के जांघ, छाती एवं शरीर के अन्य अंगों को काटकर उनके घावों पर नमक और लाल मिर्च का पाउडर रगड़ने का काम करती है। इतना ही नहीं, अमानवीय अत्याचारों की पराकाष्ठा तो यह है कि पाक सेना महिला राजनैतिक कैदियों के साथ बलात्कार करने से पूर्व उनके गुप्तांगों में छड़ी का इस्तेमाल कर यातनाएं देती रही है।

کوئٹہ، ضلع مستونگ میں غنجہ دھوڑی کے مقام پر نامعلوم افراد کی فائرنگ سے ایران جانے والے زائرین کی لاشیں جائے وقوعہ پر پڑی ہوئی ہیں فوٹو (این این آئی)

बलूचिस्तान के गायब नागरिकों के संदर्भ में पाकिस्तान के मानवाधिकार आयोग और एमनेस्टी इंटरनेशनल की अपील को भी पाक सरकार द्वारा अनसुना कर दिया गया। बलूचिस्तान का उच्च न्यायालय और पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट भी बलूचिस्तान के नागरिकों को न्याय दिलाने में विफल रही है। यही कारण है कि पाकिस्तान की "मारो और फेंक डालो" की नीति को विश्व पटल पर पर्दाफाश करने के लिए बलूच नागरिक जी जान से प्रयास कर रहे हैं।

पाकिस्तान के अत्याचार और अन्यायपूर्ण हत्याएं

पाकिस्तान की 'मारो और फेंक डालो' की नीति

नाम- दीन मोहम्मद बुगती
शहादत की तारीख- 13 अप्रैल, 2015
शहादत की जगह- गेबुन, तुरबत
अपहरण का स्थान- दाश्त, केच
अपहरण की तारीख- नवम्बर, 2014
व्यवसाय- राजनीतिक कार्यकर्ता
गृहनगर- डेरा बुगती
स्थिति- गैर-न्यायिक हत्या

नाम- डॉ. कम्बर बलूच
पुत्र- मुबारक काज़ी
शहादत की तारीख- 31 अगस्त, 2014
शहादत की जगह- पिदारक, केच
व्यवसाय- डॉक्टर
गृहनगर- केच
स्थिति- सुनियोजित हत्या

नाम- सैफुल्लाह बलूच
पुत्र- इकबाल बलूच
शहादत की तारीख- 31 अगस्त, 2014
शहादत की जगह- तमप
व्यवसाय- छात्र
गृहनगर- केच
स्थिति- हवाई बमबारी में मृत्यु

एक दर्दनाक घटना-

पंजगुर- बलूचिस्तान के पंजगुर उपनगर में बुधवार 21 सितम्बर, 2016 को एक बलूच युवा का शरीर प्राप्त हुआ है जिसका अपहरण तीन वर्ष पूर्व हुआ था।

खबर के अनुसार मोहम्मद जान शाम बेड़ाई के पुत्र का पाकिस्तानी सिपाहियों और उनके सहयोगियों द्वारा फुटबाल मैच खेलने के दौरान 15 मार्च, 2013 को अपहरण कर लिया गया था।

श्री शामबेड़ाई के परिवार ने पाकिस्तानी न्याय व्यवस्था से लेकर निर्वाचित सरकार तक सबके पास अपने बच्चे के लिए मदद की गुहार लगाई लेकिन किसी ने भी उनकी मदद नहीं की।

इस परिवार का संघर्ष 21 सितम्बर को समाप्त हो गया।

नाम- आमिर जमालदीनी (पुत्र- मोहम्मद जमालदीनी)
शहादत की तारीख- 1 अप्रैल, 2015
शहादत की जगह- गुरब्राथ, नुश्की
अपहरण की तारीख- हत्या से चार महीने पूर्व
व्यवसाय- राजनीतिक कार्यकर्ता
गृहनगर- नुश्की
स्थिति- अतिरिक्त न्यायिक हत्या

नाम- डॉ. शरीफ बलूच (पिता- मोहम्मद रमज़ान)
अपहरण की तारीख- 21 अप्रैल, 2015
अपहरण स्थल- दश्त, केच
व्यवसाय- डॉक्टर
गृहनगर- दश्त, केच
स्थिति- बलपूर्वक नजरबंद

नाम- रूकसाना बुगती (पिता- दादुल्लाह बुगती)
अपहरण की तारीख- 1 अप्रैल, 2015
अपहरण की जगह- बंधकोट, सिंध
व्यवसाय-
गृहनगर- सुई, डेरा बुगती
स्थिति- बलपूर्वक

नाम- आसिफ खालिद बलूच
अपहरण की तारीख- 30 दिसम्बर, 2014
अपहरण की जगह- पासनी
व्यवसाय- छात्र
गृहनगर- मकरान
स्थिति- बलपूर्वक

नाम- डॉ. अमीर बक्स
अपहरण की तारीख- 15 अप्रैल, 2015
अपहरण की जगह- क्वेटा
व्यवसाय- डॉक्टर
गृहनगर- क्वेटा
स्थिति- बलपूर्वक बेदखल

नाम- लुकमान इमदाद बलूच
अपहरण की जगह- अपसोर, तुरबत
अपहरण की तारीख- 3 जनवरी, 2014
व्यवसाय- कार्यकर्ता
गृहनगर- तुरबत
स्थिति- गायब

नाम- मोहम्मद हुसैन बलूच
अपहरण की जगह- पंजगुर
अपहरण की तारीख- 19 नवम्बर, 2013
व्यवसाय- किसान
गृहनगर- पंजगुर
स्थिति- गायब

मानवाधिकार कार्यकर्त्ता की हत्या

साबीन महमूद पाकिस्तान की एक प्रगतिशील मानवाधिकार कार्यकर्त्ता एवं समाजसेवी थीं; जिसने कराची में एक कॉफी हाउस स्थापित किया। कॉफी हाउस की दूसरी मंजिल पर इन्होंने एक खुले संवाद को ध्यान में रखकर 2007 में एक सामुदायिक स्थल विकसित किया। इनके नेतृत्व में कई उदार सामाजिक गतिविधियों का आयोजन यहां हुआ। साम्प्रदायिकता और धार्मिक असहिष्णुता को खत्म करने हेतु 'पाकिस्तान सबके लिए' के नारे के साथ इन्होंने इस्लामाबाद में लाल मस्जिद के खिलाफ हो रहे प्रदर्शन का सह-नेतृत्व किया। 24 अप्रैल, 2015 को साबीन महमूद ने 'बलूचिस्तान के मुद्दे' पर एक वाद-विवाद का कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें मामा कादिर जैसे कार्यकर्ता शामिल हुए। इस आयोजन के बाद एक बंदूकधारी ने इनकी गोली मारकर उस समय हत्या कर दी जब ये अपनी कॉफी हाउस में एक सेमिनार का आयोजन कर अपने घर के लिए निकल रही थीं।

शिया हज़रा (निरन्तर अल्पसंख्यक होते पाकिस्तानी)

निश्चित है बलूच का उदय

अब का पाकिस्तान

तब का पाकिस्तान

बलूचिस्तान के प्रस्तावित झण्डे

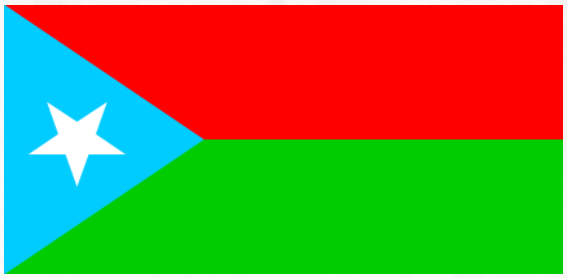

लाल रंग शहादत देने वालों के लिए नैतिक वीरता का प्रतीक है। हरा रंग स्वतंत्रता रूपी खिलते वंसत का सूचक है। नीला रंग समुद्री और हवाई शौर्य का सूचक है। सफेद तारा नैतिक रूप से बहादुरी, पुरुषत्त्व और उदारता का प्रतीक है।

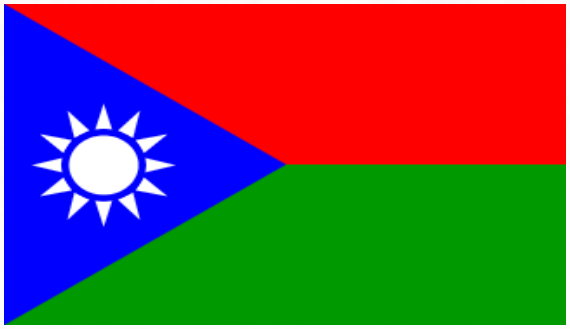

लाल- यह खून का रंग है; बलूचिस्तान की मुक्ति के लिए यहां के नागरिकों ने गर्व से साहस एवं उत्साह के साथ अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया।
नीला- यह समुद्र एवं आकाश का रंग है और यह वीरता, दृढ़ता एवं न्याय को सूचित करता है। जब तक स्वतंत्रता और न्याय नहीं मिल पाता है तब तक बलूच नागरिक अपना संघर्ष जारी रखेंगे।
सफेद- यह शांति, शुद्धता और सादगी का रंग है; बलूच नागरिक शांति एवं भाईचारे के साथ अपने स्वतंत्र राष्ट्र में रहना चाहते हैं।
उगता सूर्य- यह नई शुरूआत का प्रतीक है; बलूच एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अपने नए दिनों की शुरूआत करना चाहता है।

बलोच मुक्ति की ओर बढ़ते कदम

लन्दन में प्रदर्शन करते हुए हर्बियार मारी

दक्षिण कोरिया के देइगु शहर में प्रदर्शन करते बलूच नागरिक

स्विटजरलैंड के जेनेवा में पाकिस्तान के खिलाफ संयुक्त प्रदर्शन करते सिंधी, बलूच और कश्मीरी

विवेक काटजू

लालकिले से बड़ी बात

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लालकिले की प्राचीर से पाकिस्तान, जम्मू कश्मीर और बलूचिस्तान का मुददा उठाया है। इससे पहले किसी प्रधानमंत्री ने लालकिले से दिए गए अपने भाषण में इन मुददो का जिक्र नहीं किया। 12 अगस्त को सर्वदलीय बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर यानि पीओके के लोग पाकिस्तान के दमन का ष्ठिकार हो रहे हैं। साथ ही उन्होने विदेष्ठा मंत्रालय से दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रह रहे पीओके के लोगों से संपर्क स्थापित करने को कहा है। यह पीओके पर भारत की पूर्व स्थिति का तार्किक विस्तार है, जिसमें कहा जाता है कि पूरा जम्मू-कश्मीर राज्य भारतीय संघ का हिस्सा है और पाकिस्तान ने पीओके पर अवैध रूप से कब्जा किया हुआ है। बाद में उन्होंने अपने स्वतंत्रता दिवस के भाषण में असाधारण रूप से कहा कि पीओके और बलूचिस्तान के लोगों द्वारा व्यक्त किया गया आभार वास्तव में भारत के लोगों के लिए है। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री मोदी ने सर्वदलीय बैठक में पाकिस्तान द्वारा वहाँ किए जा रहे मानवाधिकारों के उल्लंघन का मुद्दा उठाया था।

पाकिस्तान के साथ रिश्ते सुधारने के क्रम में भारत ने कभी-भी पीओके पर खुले तौर पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन भारत के संयम से पाकिस्तान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। भारत के वहां के लोगों के साथ खुले संपर्क के अभाव के कारण भारत के लिए यह मुश्किल होगा कि वह पीओके में रहने वाले लोगों के साथ तुरत-फुरत संपर्क स्थापित कर सके-बावजूद इसके कि उन्होने मोदी के आह्वान पर तत्काल अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। पीओके में पाकिस्तान का विरोध है, लेकिन भारत को वहां के

लालकिले की प्राचीर से 15 अगस्त 2016 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

लोगों के साथ संपर्क करने के अपने प्रयासों में निरंतरता कायम करनी होगी, अन्यथा उसके लिए अपनी विश्वसनीयता कायम करना मुश्किल होगा बलूचिस्तान पर मोदी का रूख 2009 में शर्म-अल-शेख में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के वक्तव्य के ठीक उलट है। तब उन्होनें अपने पाकिस्तानी समकक्ष यूसुफ अली गिलानी के साथ बैठक के बाद साझा वक्तव्य में बलूचिस्तान का उल्लेख करने पर सहमति जताई थी। पाकिस्तान का आरोप था कि भारत उस प्रांत में हस्तक्षेप कर रहा है। अब कश्मीर में पाकिस्तान के हस्तक्षेप को लेकर मोदी आक्रामक मुद्रा में हैं। उन्होंनें पाक को अपने ही लोगों पर अत्याचार करने के लिए जिम्मेदार ठहराया है।

मोदी की दोनों टिप्पणियाँ दर्शाती हैं कि वह कश्मीर में आतंकी बुरहान वानी की मौत के बाद घाटी में पैदा हुई स्थितियों पर पाकिस्तान की प्रतिक्रिया से बहुत व्यथित हुए हैं। पाकिस्तान ने वहां आंदोलन को भड़काया है। उसकी मंशा अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान घाटी की ओर आकर्षित करना है और भारत को दबाव में लाना है। इस उद्देश्य की खातिर ही उसने अपने स्वतंत्रता दिवस को कश्मीर की आजादी के लिए समर्पित किया है। मोदी को अंतरराष्ट्रीय समुदाय को साफ शब्दों में बताना चाहिए कि भारत कश्मीर में पाकिस्तान प्रेरित और नियंत्रित प्रदर्शन से निपटने में किसी के दबाव में नहीं आएगा, भले ही वह कितना ही लंबा चले। भारत तब भी संयम का परिचय दे रहा है जब वहां सुरक्षा बलों के खिलाफ जमकर अफवाह फैलाई जा रही है। बैलेट गन के प्रयोग से पैदा हुए हालात ने लोगों का खासा ध्यान खींचा है। लिहाजा पत्थरबाजों को नियंत्रित करने के लिए सरकार को दूसरे विकल्पों पर ध्यान देना चाहिए। इस संबंध में भी अफवाह फैलाई गई है कि घाटी में प्रदर्शन स्वत: प्रेरित है और स्थानीय लोगों ने इसे स्वयं शुरू किया है। उसमें पाकिस्तान और आतंकवादी संगठनों की भूमिका नहीं हैं। जो इस दुष्प्रचार में भरोसा कर रहे हैं वह भूल रहें हैं कि बुरहान हिजबुल का सदस्य था, यहां हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हर विरोध प्रदर्शन का कोई न कोई अगुआ होता है और इस मामलें में प्रदर्शन में पाकिस्तानी एजेंटो की सीधी संलिप्तता दिखती है।

बाहरी मोर्चो पर मोदी ने कड़ा रूख अपनाया है। उन्होनें कहा है कि जम्मू-कश्मीर के संदर्भ में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की नीति इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत पर आगे बढ़ने का भरोसा दिलाया है। इसमें कोई दो राय नहीं कि यह एक अच्छी नीति है, लेकिन आज कश्मीर में हालात वाजपेयी के समय से कुछ अलग हैं। हाल के दिनों में आतंकवादी

TURKMENISTAN
Ashgabat
Dushanbe
Kashi
TAJIKISTAN
CHINA
Tabriz
Mosul
Tehran
IRAQ
Baghdad
Kabul
AFGHANISTAN
PAKISTAN
IRAN
Kandahar
Lahore
Al Basrah
Quetta
New Delhi
BALOCHISTAN
INDIA
Karachi
Gwadar
SAUDI
ARABIA
QATAR
UNITED ARAB
EMIRATES
Muscat
OMAN
Mumbai
(Bombay)
Arabian
Sea
YEMEN
Sanaa
Djibouti

Destiny of Pakistani People

First they came for the Hindus
and I didn't speak out because
I wasn't a Hindu

Then they came for the Christians
and I didn't speak out because
I wasn't a Christian

Then they came for the Balochis
and I didn't speak out because
I wasn't a Balochi

Then they came for me
And there was no one left to speak out for me

This poem is just a replica of the poem written by Martin Niemolle on the atrocities committed by Adolf Hitler in Germany.